अध्याय पाँच
मनुभंडारी की कृतियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन
I. समाज में स्त्रियों का स्थान

पूर्व प्रेमचंद युग में हिन्दी कथासाहित्य में नारी को केवल रीतिकाल की तरह श्रृंगार सामग्री मानी जाती थी। उस समय नारी पत्र कठपुतली मात्र थे। प्रेमचंद के बाद हिन्दी साहित्यकारों ने नारी की विविध रूपों की कल्पना की।

हिन्दु-धर्म ग्रन्थों में एक और नारी की प्रशंसा की गयी है तो दूसरी ओर नारी की निन्दा भी बहुत अधिक हुई है। अक्षरपंथ पुरुष को कर्म की प्रेरणा सचमुच स्त्री से ही मिलती है। सृष्टि के विकास में नारी का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है।

बीसवीं शताब्दी के पूर्ववर्त में हिन्दी साहित्य में नारी को प्रमुख स्थान दिया जाने लगा था।

आज के हिन्दी कथा क्षेत्र में चारों ओर संघर्ष दिखाई पडता है। आज कथा साहित्य में नारी को लेकर कहीं नैतिकता के मानदंड बिखरते दूर होते हैं तो कहीं नारी के लिए वैयक्तिक स्वातंत्र्य की मांग भी की जा रही है।

आजकल लेखकों ने नारी की सामाजिक दुरवस्था पर दृष्टि दालकर नारी की स्थिति को ऊँचा उठाने का प्रयास किया है। बीसवीं शताब्दी में स्त्री शिक्षा का
प्रसार विशेष तीव्रता से हुआ। इसके फलस्वरूप आज नारी पुरुषों के कथनों से कन्या मिलाकर सार्वजनिक क्षेत्रों में कार्य करने लगी है। उन पर पाताल्य शिक्षा का प्रभाव भी देख सकते हैं। नारी ने घर में रहकर पारिवारिक रूढ़ियों के विरुद्ध आन्दोलन भी किया।

आज सब कहीं स्त्री और पुरुष दोनों में समानता देख सकते हैं। दोनों का बराबर अधिकार है। सेवा-नौकरी के क्षेत्र में पुरुषों के साथ साथ आज नारियों भी प्रवेश कर गयी। फलतः नारियों का आधिक स्वाभाविक रूप बढ़ गया। नारी में स्वतंत्र, स्वाभिमान और अस्तित्व रक्षा की भावनायें जाग उठी।

हमारी संस्कृति और सम्पत्ता जीवन मूल्यों पर आधारित होती है। जीवन मूल्य व्यक्तिगत जीवन को सुरक्षा प्रदान करते हैं। जीवन के कदम अनुभवों से संरचना करते हुए उनके चरित्र का, स्वाभाविक भावभूमि पर विकास हुआ है। वे कल्पना की दुनिया में चलनेवाली परियों नहीं, इसी भूमि की हड़कड़ी और मांसवाली नारियों हैं। एक और सुरक्षा है तो यूसरी और उच्च चारित्रिक विशेषताएँ भी मोज़ुत हैं।

इसप्रकार पतित नारियों के प्रति सहानुभूति प्रकट करने के लिए और अपने वर्ग की विषमता को दूर करने के लिए कुछ महिला लेखिकाओं ने साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया। ऐसी लेखिकाओं में मजूरी का सर्वप्रथम और उल्लेखनीय स्थान है।

उन्होंने नारी के मन की स्थिति का चित्रण सजीव ढंग से किया है। मनोवैज्ञानिक चित्रण उनके नारी पात्रों की प्रमुख विशेषता है। उनका मनोविज्ञान जीवन के यथार्थ से निकलता है। प्रस्तुत अथवा मजूरी के कथा साहित्य के नारी-पात्रों
की प्रमुख समस्याओं के बारे में विचार किया जा रहा है।

II स्त्री-शिक्षा का महत्व

नारी-शिक्षा के क्षेत्र में इस समय पर्याप्त विकास हुआ है। शिक्षित नारी बाहर की ओर अधिक आकर्षित होती हैं। पुरुषों के समान ही उसने बाहर को अपना कार्य क्षेत्र बना लिया है। फलतः घर की मयादा टूटती सी लगती है। ऐसी अवस्था में नारियों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। लेखिका ने ऐसी नारियों का सूक्ष्म चित्रण किया है जिनके द्वारा वे नारी की स्थिति में सुधार करना चाहती है। पहले मनूषी की कहानियों की नारियों के बारे में विचार करें।

III कहानियों के स्त्री-पात्रों की समस्याएं

1. में हार गई (कहानी संग्रह)

प्रस्तुत कहानी संग्रह की कहानी 'ईसा के घर इस्लाम' में नारी शोधण का यथार्थ चित्रण मिलता है। सच्चाहु घर के फादर धर्म के नाम पर अधर्म ही कर रहे थे। वह युवतियों से अपनी काम-तृप्ति कर उनकी पवित्त्रता के विरुद्ध और मनोवल का नाश कर देते थे। इस के विरुद्ध एंजिला ने आवाज़ उठायी और फादर के धोखे का असली चित्र सबके सामने खुला दिया। एंजिला नारी की स्वतंत्रता चाहती थी।
पुरानी पीढ़ी की सिताराँ ऐसा शोषण मोन रूप से सहन करती थीं। लेकिन आज की सिताराँ जागृति और शिक्षा के क्षेत्र में पुरुष के बराबर असित्व चाहती है। वे अन्याय और अथर्म के विरुद्ध आवाज़ उठाने लगी। आधुनिक शिक्षा प्राप्त

नारियों निरंतर आधुनिकता की ओर झुकती रही है।

प्रस्तुत कहानी की रत्ना स्वयं देखती है "मुझे ऐसा माना है कि एक बड़ी सी सफेद चिड़ियाँ आकर मुझे अपने पंजे में दबाव कर उड़े जा रही है और उसके पंजे के बीच मेरा दम धुता जा रहा है।"\(^1\) मिलेंज़ शुक्ला का कथन है-"मैं तो पहले ही जानती थी, पता नहीं, कैसी शक्ति है फादर के पास।"\(^2\) यहाँ सफेद चिड़ियों उस फादर का प्रतीक है जिसकी पाख़ण्डता और कामवासना से चर्च और विद्यालय में नौकरी करनेवाली हर युवती पीड़ित हो जाती है।

'अभिलेख' कहानी की रंजना के द्वारा भोज खेल के जाल में फंसनेवाली युवतियों की व्यथा चित्रित हुई है। कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने व्यवहार से सबके आँखों पर 

भूल डालते हैं। यहाँ दिलीप रसिक प्रवृत्ति के होने के नाते अपनी पत्नी और बच्चों को अपने पिता के घर छोड़कर स्वयं को कुंवारा बताते हुए लड़कियों के चक्कर में घूमता रहता है। दिलीप का कथन है-"अच्छे में लड़कियों की नस-नस पहचानता हूं। तुम्हें देखते ही तुम्हें पाने की लालसा मन में उठी और इसलिए मैं मुंह मोड़कर बैठ गया।"\(^3\) रंजना को भी वह अपने वश में लाता है। यहाँ रंजना को अपने धन का नष्ट भी होता है।

1. मनोभाध्यात्मक, मैं हार गई (क.सं), पृ 18
2. मनोभाध्यात्मक, मैं हार गई (क.सं), पृ 13
3. मनोभाध्यात्मक, मैं हार गई (क.सं), पृ 79
‘दीवार, बच्चे और बरसात्’ कहानी में एक शिक्षित नारी को समाज में किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है उसका व्यक्तित्व रूप दिया गया है। शिक्षित नारी की अर्थित्त नारियों के बीच में कौन-सी अवस्था है उसका यथार्थ रूप भिन्न होता है। उस मोहल्ले में जो शिक्षित दंपती आया है उन में पत्नी कलाकारी है। उसमें साहित्य वासना है। इसलिए लोग आते जाते हैं; मीटिंग, सम्मेलन आदि होते हैं। एक बार रात में आने से वह सबके आगे परिहास का पात्र बन जाती है। अन्य में पति उसे घर से निकालता है। वह स्वतंत्र व्यक्तित्व चाहनेवाली है और उसमें नये-नये सामाजिक मूल्य भी होते हैं। इसलिए उपेक्षा का सहन करती है।

भारतीय पुरुष उदारवादी होने पर भी अपनी इच्छा के विपरीत पत्नी का इधर उधर धूमना सहन नहीं कर पाता। यहाँ पत्नी का गोष्टियों में जाना पति सहन नहीं करता है और उसे अविभाज्य की दृष्टि से देखता है। नारी की स्वच्छन्द प्रवृत्ति पुरुष के लिए कभी-कभी असाध्य बन जाती है। वह पत्नी को पहचानने में असमय बन जाता है।

प्रस्तुत कहानी की पत्नी शिक्षित और कमानेवाली है। इसलिए वह पति की अवहेलना सहकर वहाँ नहीं रहती है। यदि वह अर्थित्त हो तो पति को छोड़कर चले जाने की आदेश न करती। अपने व्यक्तित्व को छोड़कर पति के साथ जीवन बिताना आधुनिक युग में असंभव बनता जा रहा है।
'कील और कसक' में रानी पति से परित्याग है। धन के पीछे चलनेवाली पति असून्दर आदमी है। पति से कुछ संतोष पाने के लिए और प्रेम मिलने के लिए वह मन ही मन चाहती है। रानी कहती है: "अम्मा, भाभी से कह दो- मुझसे पता न करें। तुम भी नहीं रहेगी और ये यां लाज की छुई- मुई बनी रहेगी तो मुझसे खाते नहीं बनेगा। तुमने बेटा माना, तो ये क्या देखा न मानेगी।" काम तृप्ति न मिलने पर वह पर पुरुष की ओर आकर्षित होती है। यहां रानी पुरुष की सांत्वना पाने के लिए विवाह है। जैसे कि :- "रानी: एक दिन मुझे प्रदर्शनी ही दिखा लाओ। देखो ना, पड़ोस की जान औरंग देख आई।" केलाश :- तुम भी किसी के साथ चली जाती ना। रानी :- वे कोई अकेली जाती हैं, जो चली जाती। सब अपने-अपने मदों के साथ जाती हैं।

"तुम कहते तो शेखर के साथ चली जाओ।"  

इसप्रकार रानी विवाह हो जाती है। अन्तर्वेद से पीड़ित भी है।

2. तीन निगाहों की एक तस्वीर (कहानी संग्रह)

'तीन निगाहों की एक तस्वीर' की दर्शना भी बीमार पति से तृप्ति न मिलने पर अन्य पुरुष की ओर आकर्षित होती है। इस पर कुपित होकर पति उसे घर से निकाल देता है। पति की मृत्यु का समाचार सुनकर वह कहती है- "मरी तो सारी भावनायें ही जैसे जी गई है। में ही जाने क्यों निद्रा हूँ।" वह बेचारी क्या करें? वह अपने जीवन-यापन के लिए नौकरी करती है। इससे मालूम होता है।

4. मन्त्रभण्डारी, में हार गई (क.स.), पृ 119
5. मन्त्रभण्डारी, में हार गई (क.स.), पृ 121
6. मन्त्रभण्डारी, तीन निगाहों की एक तस्वीर (क.स.), पृ 26
है कि अनुप्य इच्छायें सहन करने के लिए स्वयं विवश होती हैं। फिर भी अवसर भी अवसर मिलने पर दर्शना अथवा पुरुष को अपनी तरफ आर्कित करने में सफल हो जाती है।

'अकेली' कहानी की बुआ भी मनोव्यथा सहती है। पति के होने पर भी एक विवथ के समान जीती है। क्योंकि पति हमेशा घर में न रहता है। रहते हो भी उससे प्यार न करता है। अपनी मनोव्यथा दूर करने के लिए वह पडोसवालों से स्नेहपूर्ण व्यवहार करती है।

'घुटन' की प्रतिमा भी अपने पति से अनुप्य है। साल में एक महीने के लिए पति घर आता है। वह एक महीना ही प्रतिमा के लिए दुःख देता है। दोनों का व्यक्तित्व अलग-अलग है। दोनों का सामन्यता बिलकुल असंभव है। पति के खिलाड़ी बाँहों में जाकर जाने के भय से वह कसम खाती है।

उस कहानी की मोना अपने घरवालों के लिए जीती है। घर में कमानवाली सिर्फ वह है। इसलिए प्रेमी के साथ भाग जाने का अवसर भी वह खो देती है। वह माँ से चिपकत होती है। माँ के अनुसार मोना के जाने के पश्चात् घर को आधिक स्थिति बिगड़ जाती है। बेचारी मोना निर्मिति खड़ी है।
3. यही सच है (कहानी संग्रह)

'क्षय' की कुंती आर्थिक अभाव से विवश हो जाती है। उसके आगे केवल क्षयग्रस्त पिता और छोटा भाई है। इसलिए वह तुच्छ वेतन में भी संतुष्ट है। छात्राओं की प्रिय बहन भी है। ट्यूशन भी लेती है। थोड़ा जाने पर वह वायलिन बजाती है। अर्थात् के कारण वह अपनी इच्छा के विरुद्ध आचरण करती है। सावित्री को उत्तीर्ण कराने के लिए वह प्रथम अध्यापिका से मिलती है। लेकिन हार जाती है। कुंती मन से क्षयग्रस्त हो जाती है। वह स्वयं असहाय मानती है। उसका कथन है: "हे भगवान, अब तो तू पापा को उठा ले। मुझ से बदराश्त नहीं होता। मैं दूर चुकी हूँ।"7

'नकली होरे' की मिसाल सरन अपने पति के वैभव पर गर्व करती थी। पति को वह सर्वश्रेष्ठ मानती थी। उससे बेहद प्यार करती थी। पति उसे जो वैभव देता था उस पर वह संतुष्ट थी। एक दिन उसे जात हुआ है कि पति अन्य नारियों का साथ चाहता है। यह ख़बर सुनकर वह विवश हो जाती है। इस प्रकार वह पति में रंगित रहती है। सत्य जानकर वह दुखित हो जाती है।

'नसा' कहानी में आनन्दी की अवस्था का चित्रण मिलता है। आनन्दी आपने पति को परमेश्वर मानती है। पति के शराबी होने पर भी वह सहन कर लेती है। पति उसे मारता है। इतना ही नहीं ऐसे पति को वह मजूदूरी कर पेशा देती है। बेटे के घर में रहते वक़्त भी वह पेशा कमाती ही और पति को भेरती है। यहाँ पति-पत्नी का स्थान हमें मलूम होता है। पति के पद पर अयोग्य होने पर भी आनन्दी पति को उत्तम मानती है। पुरानी रूढियों के विचारों को तोड़ने में वह

7. मनोभण्डारी, यही सच है (क. सं.) पृ 24
असफल निकलती है।

पति और पत्नी दोनों की एकता से घर आगे बढ़ता है। 'रानी माँ का चबूतरा' की गुलाबी शराबी होने के कारण अपने पति को घर से निकालती है। वह अपने बच्चों का पालन अकेले करती है। पसीना बहाकर काम करती है। अंत में थक कर वह मर जाती है। निम्न वर्ग की नारियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समूह उन्हें नीच दृष्टि से देखता है।

4. एक प्लेट सैलाव (कहानी संग्रह)

'नई नौकरी' की रचना अथवा पिक्या है। पति की नई नौकरी और प्लेट मिल गया। उसे प्लेट को पैदा कराने और भोजनों का स्वागत कराने के लिए अपना सारा समय बिताना पड़ा। पति के लिए उसे अपना प्रोफेशन छोड़ना पड़ा।

दुःख की बात है कि शिक्षित होने पर भी उसको अलग व्यक्तित्व नहीं है। पति के इच्छानुसार काम आगे बढ़ता है। कुंदन का कथन है-"कल मुझे पेपर पढ़ना है। पन्तह दिन पहले टॉपिक मिला है। एक लाइन भी नहीं लिखी है... अब कोई झूठा बहाना ही तो बनाना पड़ेगा।" 8 उसका जीवन यंत्रवत् बन गया है। यहाँ रामा की अवस्था खिलाने के समान है।

'बंद दराजों का साथ' की मंज़री की समस्या अलग है। पहली और दूसरी शादी से उसे मानसिक सन्तोष न मिलता है। पहले पति के विवाह के पूर्व के बच्चे की कथा जानकर उससे अलग रहती है और दूसरे व्यक्ति से उसकी शादी होती है।

8. मन्नू हण्डारी, एक प्लेट सैलाव (क. सं) पृ 15
अपना बेटा होटल में रहता है। बेटे की आवश्यकताओं को अच्छी तरह संभालने में दूसरा पति विमुखता प्रकट करता है। मंजरी सोचती है'-"आज जिन्दगी का हर पहलू हर स्थिति और हर संबंध एक समाधान हीन समस्या होकर ही आता है, जिसे सुलझाया नहीं जा सकता, केवल भोगा जा सकता है। जिसमें आदमी निरंतर बिखरता और ढूंढता चलता है।" मंजरी ने अपनी नौकरी छोड़ देती। वह विवाह बन जाती है। यहाँ मंजरी का मन दूसरे पति और अपने बेटे दोनों के लिए बंट जाता है।

'एक बार और' की विश्व समस्याओं से घिर रही है। उसकी समस्या विचित्र है। पहले वह कुंज़ से प्रेम करती है। लेकिन कुंज की शादी मधु से हुई। शादी के बाद भी वह पूर्व संबंध चाहता है। कुंज का कथन है'-"विश्व, तुम्हारी बताओ में क्या करूँ? मेरी अवस्था ही मेरे लिए बहुत भारी पड़ रही है। यह सब मुझे चलता नहीं। यह दूरी जिन्दगी, यह हर श्रान का तनाव...।" मंजरी की व्यथा इतनी गहरी है कि दूसरी शादी उसके लिए असंभव बन जाती है।

'संख्या के पार' की प्रभाव को माँ का प्यार नहीं मिला। माँ उसे छोड़कर भाग जाती है। प्रभाव सबकी आंखों का तारा है। प्रभाव माँ का घर आने पर बाबा क्रोध प्रकट करता है। आजी दर्द से कहती है'-"एक बार अगर वह प्रभाव को देख ही लेनी तो क्या हो जाएगा...? वह माँ है......तुम उसका दुःख क्यों नहीं समझते हो।?"' "दान-दान को मुहलाज कर दिया मेरी बच्ची को.....देखते तो कालेजा मुंह को आ जाता......कह रही थी कि किसी ने बता दिया कि प्रभाव

9. मन्नूंबण्डरी, एक प्लेट सेलाब (क. सं) पृ 24
10. मन्नूंबण्डरी, एक प्लेट सेलाब (क. सं) पृ 60
11. मन्नूंबण्डरी, एक प्लेट सेलाब (क. सं) पृ 92
बड़े दुःख में हैं। सो सबसे लड़-झगड़कर उसे देखने चाही आयी।"12 बाबा को देखते ही प्रियिला माँ की ममता और वातस्य चाहती है। लेकिन बाबा बाधक बन जाता है। वह विवश हो जाती है। एक ओर पालन पोषण करनेवाले हैं तो दूसरी ओर जन्म देनेवाली माँ।

'बाहों का घेरा' की कम्मो प्यार चाहती है। प्यार के लिए वह प्यासा है। वह देखती है कि सौतेली माँ अपने बेटे को चूमती है। जो उसे प्यार करता है उसकी बाहों में समा जान् के सपने वह देखती है। प्रेमी शैलेन के पत्र पढ़कर वह सोचती है-'कम्मो, मैं तुम्हारे बिना कितना अंकेला हूँ; कितना असहाय। मुझे अपनी बाहों के घेरे में बाँध लो कम्मो।"13 ये सब मन की चिंताएँ हैं। उसे माँ का प्यार मिलने का भाव न मिला, प्रेमी से भी न मिला। पति तो उसकी ओर ध्यान न करता है। चारों ओर मार्ग नहीं है। अंत में अपने बेटे को बाहों में कसकर सो जाती है।

कम्मो महसूस करती है-'उसका पति मितल बहुत जड़ है। उसमें प्यार की गर्मी और पागल बना देनेवाली आतुरता कुछ भी नहीं है।"14

डॉ. श्रीराम महाजन का मत है-'नारी मन को पुरुष से भावनात्मक मिळास की अपेक्षा होती है। अपनी भीतरी आवश्यकता की पूर्ति करना चाहती है। केवल ब्राह्मण देहिक मिलन से उसके मन को परितोष नहीं होता। अतः देहिक मिलन के बावजूद मन की सृष्टि भूष की पूर्ति के लिए वह पुरुष के प्रति आकर्षित होती है।"15

12. मदुभण्डारी, एक प्लेट सेलाब (क. सं.) पृ 92
13. मदुभण्डारी, एक प्लेट सेलाब (क. सं.) पृ 108
14. मदुभण्डारी, एक प्लेट सेलाब (क. सं.) पृ 113
15. डॉ. श्रीराम महाजन, आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में काम मूलक संवेदना, पृ 171
प्रस्तुत कहानि में प्यार के अभाव से विवश नारी का चित्रण है।

कमरे, कमरा और कमरे की नीलू अपने पति की इच्छा के कारण नौकरी छोड़ती है। पहले उसका संसार घर के पाँच कमरे हैं तो नौकरी पाने पर एक कमरा बन जाता है और शादी के बाद फ्लैट अपना संसार बन जाता है। यहां एक क्रियाशील प्राथमिकता की चाह पति की चाह के नीचे दब जाती है। क्योंकि उसका पति श्राविन्यस "एक धनी, शिष्ट और मिहायत ही सोफेस्टिकेटेड किस्म का आदमी है।" 16

5. त्रितंकु (कहानी संग्रह)

'आते जाते यायावर' की मिताली पुरुष से बच्चित नारी है। प्रेमी ने भरोसा कराकर उससे शारीरिक संबंध स्थापित किया। वह प्राथमिकता है। शिक्षित और सम्बंध होने पर भी उसे धोखा मिला। सालों तक वह किसी से मेलजोल न करती है। लेकिन एक सहेली के घर में नरेन से परिचित होती है। दुःख की बात है कि फिर एक बार वह छलिया जाती है। इस प्रकार अभावी पुरुषों के दयाहीन व्यवहार से अविवाहित रहनेवाली स्त्रियों की संख्या बहुत अधिक है।

'स्त्री-सुवोधिनी' की नायिका नौकरी करती है। घर का दाहित्य उस पर है। फिर भी वह अपने बोस से आकस्मिक होती है। वे पति-पत्नी के समान जीते हैं। लेकिन अंत में उसे जात होता है कि बोस विवाहित ही नहीं एक बच्चे का पिता

16. मनोज मण्डलारी, एक प्लेट सेलाब (क. सं.), पृ 117
भी है। वह बोझ से पूछती है-" रामभुन की तरह 'तुम मेरी हो, तुम मेरी हो' की रट लगानेवाले हिंदु साहब, बलात्कार तो आप की जिन्दगी के इस सारे लामड़ान में में कहाँ हूँ-में कितनी हूँ ?"। 17 बोझ जानबूझकर एक अविवाहित मल्ली का जीवन खराब करता है। इसप्रकार नारियल विवाहित पुरुषों के जाल में फंस कर चुरी तरह मनोव्यथा सहनी हैं। सचमुच यह तो अथर्म है। निष्काशाय स्वरूपों यहाँ कलकित हो जाती हैं।

'शायद' कहानी की माला अपने पति की अनुपस्थिति में घर को संभालती है। इसके लिए उसे पास-पड़ोसिन की आवश्यकता है। पति तीन साल के बाद दो महीने की छुट्टियों पर आता है। उसने पति से पूछा " मुझे तो, दो साल कटना ही इतना भारी पड़ता था, इस बार तुमने पूरे तीन साल लगा दिये। पूजा पर कितनी-कितनी राह देखी। बेचारे बच्चों को एक-एक नया कपड़ा तक न दिलवा सका।"। 18

पति की उपस्थिति में पड़ोसिनवालों से प्यार न करने पर उसे मालूम हुआ कि पति के न होने पर वह अकेली बन जाएगी। इसलिए वह पति पर अधिक ध्यान न देकर पड़ोसिनवालों के प्रति आकर्षित होती है। यहाँ पति मेहमान बन जाता है। पति के मन में अपने कार्य है तो माला के मन में अपने कार्य।

प्रस्तुत कहानी में पति के सालों तक दूर रहने से क्या-क्या समस्यायें आती हैं उसका यथार्थ चित्रण मिलता है।

17. मनुभण्डारी, तिराओकु (क. सं.), पृ 41
18. मनुभण्डारी, तिराओकु (क. सं.), पृ 46
'त्रिरंकु' कहानी की तनू का अपना अलग व्यक्तित्व नहीं है । मम्मी के कथन के अनुसार उसे चलना पड़ता है । उसने मम्मी से कहा-" मम्मी, ये जो सामने लड़के आये है, जब दोखो मुझ पर रिमार्क पास करते हैं । मैं चुपचाप नहीं सुनूंगी, में भी यहाँ से जवाब दूंगी।"19 उसकी मम्मी का व्यक्तित्व निर्दिष्ट नहीं है । प्रत्येक क्षण में वह बदलता है । कभी-कभी मां का, कभी-कभी नाना का है । वह स्वयं आधुनिकतावादी कहलाती है । इस तरह तनू मम्मी को आदत देखकर दुःखित होती है । अन्य लड़कों से दोस्ती लेना न चाहने पर भी मम्मी मुहल्लेराने लड़कों से दोस्ती करवाती है । लेकिन अपने मित्र शंखर के प्रति जो दोस्ती है उसकी मम्मी अनुचित मानती है । इस प्रकार अपने व्यक्तित्व के विकास के पथ पर मम्मी बाधा बन जाती है ।

'एकाने आकाश नाई' में शहर की नारियों और गांव की नारियों की समस्याओं का चित्रण किया गया है । नौकरी के साथ पढाई और घर की देखभाल, यदि नौकरी हो तो घर की एकमात्र कमानेरानी होने से लड़की की मां न कराया जाना, कुछ नारियों के निम्नमेदारी का पालन ठीक तरह न करने पर नौकरी से छुड़वाना ये सब शहरी समस्याएं हैं जो गांव में हरेक की अलग-अलग समस्यायें हैं। सास-ससुर की देखभाल करने पर भी समतृप्त न होना, बेतन के दिन घरबालों को उपहार न लाने पर असंतोष प्रकट कराया जाना, नौकरी हो तो हरेक की समस्याओं को ठीक तरह संभालना ये सब ग्राम की समस्यायें हैं । प्रस्तुत कहानी की लेखा शहर की समस्याओं से ऊबकर गांव जाना चाहती है । वहीं भी सदर समस्याओं का

19. मन्नूभण्डारी, त्रिरंकु (क. सं ), पृ 67
सामना करना पड़ता है। अंत में वह शहर चाहिए जाना चाहती है। मतलब है कि शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार के जीवन से हमें सदा सुख न मिलता है। कोई मनुष्य पूर्ण नहीं है। सबको अपूर्ण व्यक्तित्व का सामना करना पड़ता है। सुख-दुःख का समन्वय रूप है जीवन। थोड़ा मिलने पर अधिक मिलने की इच्छा होती है। प्रस्तुत कहानी की लेखा पहले शहर में जीवन बिताती है तो बाद में ग्रामीण जीवन पसंद करती है। इन दोनों प्रकार के जीवन से उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ये समस्याएँ सहज हैं।

1४. उपन्यासों के स्त्री-पात्रों की समस्याएँ

1. आपका बंटी

a. शकुन :- 'आपका बंटी' की शकुन को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उसके अनेक रूप होते हैं- पत्नी, माँ और प्रिंसिपल। इन तीन रूपों का अलग-अलग महत्व है। पत्नी के रूप में उसे सफलता न मिली है। अजय से उसका मनोभाव अलग है। मूल कारण यह है कि दोनों हारना नहीं पसंद करते हैं। वे समझौता कर लेते हैं। किन्तु हार जाते हैं। अंह की भावना उन्हें आगे बढ़ाती है।

पति-पत्नी की आदत समान्तर रेखाओं के समान है। अजय के साथ जीने में स्वयं असमर्थ समझकर शकुन अपने बंटे के साथ वहाँ से चली जाती है।
सालों बाद शकुन प्रिंसिपल बन जाती है। उसने अपने बेटे को बहुत अधिक प्यार किया। इस प्रकार आगे बढ़ते समय उसे मालूम हुआ कि अजय दूसरी स्त्री के साथ जीना चाहता है। शकुन विचार करती है।" अजय को उसे दिखा देना है कि वह अगर एक नई जिन्दगी की शुरुआत कर सकता है। तो वह भी कर सकती है। नहीं उसे किसी को कुछ नहीं दिखाना है। जो कुछ भी करना है अपनेलिए करना है।"20

आज कल शिक्षित और सभ्य होने पर भी अकेली रहना सिया़े के लिए सुरक्षित नहीं है। शकुन ने डॉ. जोशी से विवाह किया। जोशी के बारे में उसका कथन है।"डॉक्टर के व्यवहार में एक धीरता है, ठहराव। जैसे डॉक्टर ने अपनी जिन्दगी में बहुत कुछ पाया है।"21 दूसरी शादी के बाद भी उसको समस्याओं से मुक्त न मिली।

"शकुन कभी कभी डॉक्टर के सामने अकारण ही अपने आपको बड़ा छोटा महसूस करने लगता है, लगता है जैसे डॉक्टर ने स्वीकार करके उस पर बड़ी कृपा की है। डॉक्टर की बातों में उसके सारे व्यक्तित्व में कुछ ऐसा है, जो शकुन को आभासत करता है। डॉक्टर की सुलझी दृष्टि उसे बहुत सी उलझनों से उबार लेती है।"22

अब बेटा बंटी उसे दुःखी बनाता है। बंटी के बिना शकुन का जीना मुश्किल

20. मन्नदुरियार, आपका बंटी, पृ 32
21. मन्नदुरियार, आपका बंटी, पृ 22
22. मन्नदुरियार, आपका बंटी, पृ 122
है। पर बंटी का व्यवहार जोशी के घर में अच्छा नहीं लगता। माँ और बेटा समान रूप से दुःखी हैं।

शकुन की अगली समस्या बंटी का अपने पाप के साथ कलकत्ता जाना भी है। अजय के पास बंटी को भेजना शकुन पसंद न करती है। लेकिन ऐसा करना पड़ता है-शकुन का मन अत्यंत दुःखल और अतीव दुःखी बन जाता है।

इस प्रकार शकुन के चारों ओर समस्यायें हैं! प्रिसिपल के रूप में उसे खुशी मिलती है। बंटी को बहुत प्यार करने पर भी उसे कलकत्ता भेजना पड़ता है। अर्थात् विवाहोपरात शकुन स्वस्थ मन से सोती ही नहीं है।

शकुन पूर्णतः बंटी की मम्मी बनकर घर में रहती है-कोमल, सुन्दर और भोली-भाली। प्रिसिपल बनती है तो डीनेवाली और कठिन।

शकुन की अन्दर दस वर्षीय विवाह जीवन के सुख-दुःख सम्मिलित हैं। डॉ. जोशी के साथ जुड़कर भी वह मनोवेदना भोगती है। दब कर जीना उसकी अहं को पसंद नहीं है। तो उच्च होकर जीने लायक कोई पूंजी उसके पास नहीं है।

शकुन की न्यूनता यह है कि अटल निर्णय लेने में वह असमर्थ है। अजय से अलग होने के पश्चात उसने अपने पत्नीत्व को मातृस्त के रूप में परिणत कर दिया।
अपना मातृत्व बंटी पर अर्पित करके उसने अपने विषाद को दूर करना चाहा । बंटी के जाने के बाद भी शकुन जोशी के घर में संपूर्ण सुख पा न सकी ।

शकुन विवाह बन जाती है । वह पहले पति से और दूसरे पति से भी सामंजस्य स्थापित न कर सकी । उसकी दूसरी शादी का मूल कारण अजन्य के प्रति उत्पन्न रोष ही था । उसे अकेलापन का जरा भी डर नहीं है ।

हम समझ सकते हैं कि उपन्यासकार व्यापक स्तर पर मनुष्य के आंतरिक क्रियात्मक आकांक्षाओं, सफलताओं, विचारों और अनुभवों को रूपांतर करती हैं । यह चित्तन प्रक्रिया शकुन की ओर से बिलकुल ठीक है ।

अपनी भूल से उत्पन्न गलतियों की सजा सन्तान को देने की रीति के प्रति लेखका सहमत नहीं है । यहाँ शकुन का प्रिंसिपल होने पर भी उसके प्रति पडोसियों का दृष्टिकोण मान्य नहीं है ।

कुल मिलाकर कहें तो शकुन की ज़िन्दगी जीवन के यथार्थ से संबंध होती है । इसे व्यक्त करने के लिए कभी-कभी व्याय की शैली का भी प्रयोग किया गया है । शिक्षित और ऊँचे पद के योग्य होने पर भी अपनी ज़िन्दगी को सुखारू ढंग से आगे बढ़ाने में वह असमय निकलता है । उसके आगे समस्याओं का पहाड है । जीवन में समस्यायें उसके चारों ओर प्रश्न चिह्न उठाती हैं । सचमुच समस्यायें से
घर रही है।

शकुनन और अजय की पारिवारिक समस्याओं का मूल उनका बेटा बंटी ही है। बंटी के लिए ही उन्होंने सही ज़िन्दगी का आरंभ किया। यहाँ शकुन के चरित्र का अत्यंत जटिलता से चित्रण किया है।

2. एक इंच मुख्तार
a. रंजना

'एक इंच मुख्तार' की रंजना बिलकुल पतिव्रता नारी है। ऐसी नारियाँ पति की इच्छा जानकर व्यवहार करती है।

रंजना अमर से प्यार करती है। अमर भी उसे चाहता है। लेकिन जब अमल के अमर के जीवन में आने की संभावना है तब रंजना पति की संतृप्ति और खुशी के लिए उसे छोड़ती है। यहाँ पति- पत्नी में सामाजिक का अभाव है। अन्त में वह एकाकी जीवन बिताती थी। यहाँ अमर रंजना को पर्याप्त रूप से समझ नहीं पाता है। अमर के मन में उसके लिए स्थान था। फिर भी वह एक दूसरी नारी के आने पर रंजना पति को छोड़ देती है। रंजना में सहानुभूति अधिक मात्र में मौजूद है। इसलिए वह पति के मार्ग में बाधा बनने के पहले दूर भाग गयी। उसने पति के लिए अपना जीवन समर्पित किया।
पहले वह सोचती थी “नहीं जैसे भी होगा में अमर के मन का सारा मैल थोे दूँगी। क्यों आजकल वह हर एक बात को व्यक्तिगत स्तर पर लेकर घुटना और दुखिया होता है?...... के से बात शुरू करेगी?...... पर वह अमर को मना लेगी..... इस बार वह किसी बात की परवाह नहीं करेगी। वह......साफ कह देगी, देखो अमर, तुम इस तरह रहोगे तो मी कुछ नहीं कर सकूंगी। मुझसे तुम्हारी नाराजगी, तुम्हारा दुःख तुम्हारी उपेक्षा कुछ भी तो नहीं सहा जाता।”23

कभी-कभी वह अपना दुःख प्रकट करती है-" पागलों की तरह सिर को तकिए पर पटक कर बोली नहीं...नहीं......नहीं। मेरा कोई आत्मसम्मान नहीं, कोई अहं नहीं....।"24 मौं बनना हर एक नारी की इच्छा है। मातृत्व का महत्व श्रेष्ठ है। लेकिन उसके गर्भवती होने पर अमर ने बच्चे को एबोर्ट करवा डाला। एबोर्ट करने पर अमर भी दुखित है। वह कहता है- “मैं ने कभी किसी को मारना नहीं चाहा, किसी को मारा भी नहीं, पिर भी हत्या का अपराध मेरे सिर पर असह्य बोझ की तरह लदा रहता है。”25

रजनी ठीक दुःख भोग रही थी। उसे किसी तरह की विघटन है। समस्याओं को हल करने की क्षमता उसमें कम है। वह जीवन से पतलायन करना चाहती है।

पति की बुरी आदत से दुःखी होने पर भी रजनी स्वतंत्र व्यक्तित्व चाहती थी। अपनी नींव की में वह संतुष्ट है।

---
23. राजेन्द्र यादव एवं मनोभूमण्डली, एक इंक मुस्कान, पृ 85
24. राजेन्द्र यादव एवं मनोभूमण्डली, एक इंक मुस्कान, पृ 58
25. राजेन्द्र यादव एवं मनोभूमण्डली, एक इंक मुस्कान, पृ 171
b. अमला

'एक इंच मुस्कान' की अमला अपने पति से परित्यक्ता है। दाम्यत्य में परस्पर सामंजस्य न होने पर संकीर्ण समस्याओं में उत्पन्न होती है। 'अह्ं' की भावना मौजूद होने पर हमेशा विवाद पैदा होता है। पति-परित्यक्ता होने पर भी वह अमर से प्यार करती है।

शादी के बारे में अमला का विचार है-"मेरे विचार से विवाह केवल एक वंधन है। एक फंदा है जो प्यार का गला घोट देता है। विवाह कर लोगे तो तुम मर जाओगे, वह मर जाएगी, तुम लोगों का प्यार मर जाएगा। तुम्हारे जीवन में रह जाएगा। एक मानसिक तनाव और उसके जीवन में रह जाएगी अविरल अश्रुधारा।"26

अमला ऐसे जीवन की इच्छा करती है-"उसका जीवन जल की एक उन्मुक्त धारा हो...चेतों, जंगलों और पहाड़ों पर समान निष्ठा से बहती जल की धारा चाहे केलाश हो, चाहे अमर हो, चाहे कोई और हो-उसके लिए सब समान है।"27 जो भी हो अंत तक अकेलापन की चिंता उसे सताती रही। एक दिन उसने आत्महत्या कर डाली। आघूणकदाबेद के होने पर भी जीवन रूपी नौका में अकेले होने पर विवश हो जाती है। आघूणक नारी होने पर भी उसमें एकाकीपन का बोध मौजूद था। परित्यक्ता होने पर समाज के परिहास का पात्र बन जाती है। लोग सदा उस

26. राजेन्द्र यादव एवं मनूभण्डरी, एक इंच मुस्कान, पृ 248
27. राजेन्द्र यादव एवं मनूभण्डरी, एक इंच मुस्कान, पृ 126
पर दोष आरोपित करते हैं। वह अमर से कहती है- "यही आकर लगता है कि हम दोनों के जीवन कहीं सामय है...अपने-अपने व्यक्तित्व के एक सिरे पर हम दोनों की बहुत साधारण हैं, बहुत ही साधारण...हविरों, वहीं इच्छायें, वहीं कमजोरियाँ पर व्यक्तित्व के दूसरे सिरे पर कुछ ऐसे विशिष्ट हैं कि साधारण बातों की प्रतिक्रिया और परिणति भिन्न ही होती।"²⁸

अमला के चोरों और की ज़िन्दगी असंतुलित दीख पड़ती है। एक हद तक उसने सबसे लड़ाई की। आखिरी क्षण तक हार उससे दूर रहती है। फिर भी अंत में भीरू की तरह आत्महत्या करनी पड़ी।

डो. विजयमोहन सिंह का कथन है- "इस उपन्यास में प्रेम की तलाश की मुख्य समस्या यह है कि प्रेम दो व्यक्तियों पर सभी विद्युतों पर नहीं मिलता। बल्कि वे किसी एक विद्युत पर तो मिलते हैं; लेकिन बाकी विद्युतों पर अलग रहते हैं। प्रेम संपूर्ण एकत्मकता नहीं है।"²⁹ प्रेम में संघर्षात्मक स्थिति पेड़ी होने पर हमने जन्म लेता है।

प्रस्तुत उपन्यास में विवाह को अर्थ और व्यवसाय के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया गया है। दाम्पत्य जीवन को नए कोणों से देखने की कोशिश की गयी है।

²⁸. राजेन्द्र यादव एवं मनोज कुमार, "एक इंच मुस्कान", पृ 167
²⁹. डो. विजय मोहन भोग, "आधुनिक हिंदी उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना", पृ 399
अमला पुरुष से एक अवचेतन प्रतिषेध करती है। वह पुरुष-मित्र चाहती है पर अपने स्वतंत्रता में बाधा पैदा करनेवाले पति को नहीं चाहती है। प्रेम करते समय मानसिक कुण्ठाओं के लिए स्थान नहीं है। अमला के अनुसार पति और परिवार स्त्री के चारों और जाल डालते हैं। पूर्ण मन से उससे मुक्त पाना असंभव है। यहाँ अमला और रंजना दोनों प्रेम की ट्रोजिडी के पात्र हैं। प्रेम करते वक्त हम संकुचित बन जाते हैं। हमारा मन विशाल नहीं होता। गलती को पहचानने की क्षमता कम होती है। मन सुन्दर सपनों की दुनिया में हैं। विपक्ष में पड़ने के पहले जीवन को बचाने के उपाय सोजक लेने चाहिए।

3. स्वामी

a. मिनी

'स्वामी' नामक उपन्यास की मिनी-शादी के फहलें एक छोटी बालिका को तरह घृंठनी रही। वह पड़ी-लिखी और समझदार लड़की है। अपने घर में मामा से बहस करनेवाले आदमी नरेन से वह प्यार करती है। मामा उसे बी.ए. तक पढ़ना चाहता है। पर मिनी की माँ नहीं चाहती है। माँ आस्तिक है। आधुनिक बोध उसमें नहीं है। उसके अनुसार शादी के समय अपना स्वतंत्र विचार प्रकट करने का अधिकार लड़कियों को नहीं मिलता है। घरवालों की इच्छा मुख्य है।

नरेन के प्रति मिनी के मन में जो प्रेम है उसे मामा जानते हैं। फिर भी वह
अपनी बहन की खुशी के लिए दूसरे पुरुष को खोजता है। इस प्रकार मिनी के प्रेम की जीत न हुई। उसको मां लड़कियों की उच्च शिक्षा के भी विरुद्ध है। उसको मां गिरी अपने भाई से कहती है - "जान लो दादा, तुम्हारा यह अतिरिक्त लाद ही किसी दिन इसके दुःख का सबसे बड़ा कारण बनेगा। उस दिन चाह कर भी शायद तुम इसके लिए कुछ नहीं पाओगे।....यह मनमानी, यह जिद, यह गुस्सा, बात-बात पर तुनकना....लड़की होकर जन्म लिया है। इन गुणों को लेकर कितने दिन जीवन चलेगा। परापरे घर जायंगी तो एक दिन के लिए भी यह सब कोई बदास्त नहीं करेगा।" 30 दाम्पत्य जीवन में भी उसे सन्तोष न मिलता। ससुरालवाले भी पति से घृणा करते हैं। पति से उसे काम संतुलित असंभव है। मिनी की अस्थिया यह है। "सामने खड़े इस व्यक्ति को वह कभी समझ नहीं पायेंगी, किंतु उन से पाये जान उसे जानने के लिए हमेशा ओढ़ा पढ़ गया है।" 31 दोनों और से उसे खुशी न मिली। पति के मन में सनेह, रुचि, करुणा आदि भावों के होने पर भी ससुराल में पति सिर्फ यथार्थत है। उन्हें अलग अस्तित्व नहीं है।

कभी-कभी मिनी अपने पति को आकर्षित करने के लिए श्रृंगार करती थी।

"रात में मिनी ने पति की दी हुई ही साड़ी पहनी-लगा जैसे मात्र साड़ी ही नहीं पहनी, पति का दिया संपूर्ण सनेह और समर्पण अपने चारों और ओढ़ लिया है। हल्का-सा प्रसाधन करके जब वह शीशे के सामने खड़ी हुई तो मुख्भ भाव से अपने को ही निहारती रही।" 32

30. महूर्धारी, स्वामी, पृ 24
31. महूर्धारी, स्वामी, पृ 75
32. महूर्धारी, स्वामी, पृ 89
मिनी को अब तक दाम्पत्य से स्थायी सुख न मिला। पति भले मानुष होने पर भी दाम्पत्य जीवन परिपूर्णता की ओर न चलता है। उसकी अत्युद्ध कामवासना का स्पष्ट चित्र हमें मिलता है। वह कई सप्तम देखती है। "न जाने कितने चित्र आँखों के सामने बन बिखड़ रहे हैं। पति उसे पलंग पर देखकर मुसकूरा रहे हैं और फिर जैसे ही उन्होंने बोझ में भरकर उसे अपने पास खोला, उसने अपने आपको पति के हवाले कर दिया।"33

इसप्रकार सौदागरी कई समस्याओं से जूझकर आगे बढ़ती है। जो भी है उसका पति एक भोला भाला आदमी है। कलंक के बारे में सोचे बिना ही दोनों हाथों से अपनी पत्नी को स्वीकार करता है। पहले उसके पत्थर जैसे व्यवहार को देखकर मिनी आत्मन्त्रण की अवस्था में थी। लेकिन अब पति के उदार और श्रेष्ठ व्यक्तित्व के आगे वह सिर झुकाती है। सचमुच अब उसे नया जन्म मिलता है।

एक विवाहित नारी को अपने सपनों को ससुरालवालों के लिए खोकर ज़िन्दगी आगे बढ़ती सचमुच स्वीकृत्त का अपमान है। ऐसी नारी में एक तरह की अपक्षता हम देख सकते हैं।

33. भजूभक्षणरी, स्वामी, पृ 89
V निष्कर्ष

कहानी का पाठक बदलता है। युग के अनुरूप उसकी मान्यताओं, सुखियों में परिवर्तन आता है। इसलिए समय-समय के परिवर्तनों को मन्नूजी ने भी स्वीकार किया है। जीवन का बोझ, उसका दर्द, उदासी सब उनके कथा साहित्य में मौजूद है।

आधुनिक कथा साहित्य के शिल्प का प्रमुख आधार भविष्यवक्ता की स्थापना और क्षण-बोध है। ये जीवन के हर पक्ष से प्राप्त हो सकते हैं। अनुभूतियों की सहजता मन्नूजी के कथा साहित्य में देख सकते हैं।

कभी-कभी आधुनिक कहानी का पात्र समग्र और संपूर्ण रूप में नहीं, खण्ड रूप में सामने आता है। आज कल कथाकार को शिल्प को सृष्टि बनाना पड़ता है। इसलिए राग्मन, चित्र-चित्रण और चरम सीमा के पुराने विवाद को छोड़कर कहानी और उपन्यास के शिल्प को रूढ़ियुक्त कर देते हैं। इसलिए आज कल कहानी के क्षेत्र जीवन की किसी भी अनुभूति अथवा इसके एक बिन्दु को, एक विशुद्ध मनस्थिति को, घटना, भाव-दशा अथवा विचार को लेकर लिखा जा रहा है। जो भी हो ऐसी कहानियाँ में जीवन के सजीव चित्र मिलते हैं। जीवन से जुड़ाने तथा वर्णनों को चुनौती देने का विद्रोह भरा भाव भी इनमें मिलता है।
मन्नूजी ने वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, आत्म कथात्मक, पत्रेश बैंक संबंधी, कथोपकथन प्रधान, चिंत प्रधान, प्रतीकात्मक आदि विभिन्न शैलियों का प्रयोग भी किया है। उनके कुछ पत्रों के दाम्पत्य ने एक और शारीरिक पवित्रता की मूल्य को आहत किया है तो दूसरी और पत्नी के साथ पुनः शुरुआत करके प्रचलित सामाजिक मूल्यांको को चुनौती भी दी गयी है। उनकी भाषा यथार्थ परख और वैज्ञानिक रूप से काम करती है।

स्पष्ट है कि भारतीय नारी 'सतीत्व' और 'पवित्रता' के प्रति एक बौद्धिक रूप से अपनाने जा रही है और स्थिति विशेष में उन्हें खट्टी होना पड़ता है।

स्वतंत्रता के बाद स्वभाव भंग, निराशा तथा विघटनकारी दवाओं के प्रभाव स्वतंत्र स्वरूप जीवन में कठोर निराशा और अनास्था उत्पन्न हुई। भारतीय जनता पर पारंपरिक साहित्य के प्रभाव के द्वारा स्वतंत्रता, प्रजातन्त्र, समाज, अंधकार और कर्तव्य के प्रति ज्ञानी प्रकट हुई। इन्होंने हिन्दी कथा साहित्य को एक नया मोड प्रदान किया। पहले अस्वतंत्रता के कारण हमारी चेतना कुंडित थी। शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने तथा अन्य क्षेत्र का नवीन दृष्टिकोणों से अवलोकन किया।

मानव जीवन और साहित्य दोनों ही अपने देशकाल एवं वातावरण से प्रभावित होते हैं। अतः जीवन दर्शन भी देशकाल, वातावरण से प्रभावित होता है। व्यक्तिगत संदभां ने परिवार की टूटन, व्यक्ति का एकाकीपण एवं मृत्यु का भय उल्लेखनीय है।
भविष्यवादी उपन्यासों के पात्र समाज की दमनकारी शक्तियों से पलायन या 
विद्रोह करते हैं। एकाकौन, मृत्यु भीति, अधिनायक आदि से आधुनिक मानव धिर रहे हैं। पति-पत्नी को अपने स्वतंत्र अधिकार की इच्छा के कारण यातना 
भोगनी पड़ती है। अपने कथा साहित्य में मन्नूजी ने इन भावों का साकार चित्रण 
किया है।

मन्नूजी के प्रथम कहानी संग्रह ‘भें हार गई’ की बारह कहानियों के अन्दर 
नारी की मुक्ति, दृढ़, विषम परिस्थितियों, मनोव्यवहारिकता, शिक्षित नारियों की 
मनस्थिति, सीतले माँ के साथ जीने की अवस्था, आधिक शोषण, मानवीय प्रेम, 
आधुनिकता बोध, आन्तरिक कमजोरियों की दशा आदि का ठीक चित्रण किया गया 
है।

उसी प्रकार ‘तीन निगाहों की एक तस्वीर’ कहानी संग्रह में परिवारिक, 
दाम्पत्य जीवन, अकेलापन, अजनबीय, अदृश्य, आधिक अभाव, मानसिक संधर्भ, 
नारी की अन्तर्मौन इन सबका ओजस्वी वर्णन किया गया है।

‘यही सच है’ कहानी संग्रह में संधर्भत नारी की अवस्था, जिम्मेदारी, 
अकेलापन, भ्रष्टाचार, नारी जीवन की दयनीय स्थिति, प्रेम का परिवर्तन, स्वरूप, 
भारतीय नारी की छवि आदि देख सकते हैं।
'एक प्लेट सैलाब' कहानी संग्रह में आधुनिक रहन-सहन, पुनर्विवाह की समस्या, तनाव, एकाकीपन, अत्याब, नारी का सामाजिक रूप, अधूरे व्यक्तित्व आदि का चित्रण मिलता है।

'ग्रिशंकु' कहानी संग्रह में दाम्पत्य जीवन, अहं, प्रेम का परिवर्तित रूप, परिवारिक मूल्यों का अवमूल्यन, नारी का स्वतंत्र अस्तित्व, विद्रोह, कूट, धनाभाव आदि का चित्रण किया गया है।

इस प्रकार महूर्जी के कथा साहित्य में नारी जीवन की विषमता दुर्घटनाओं से बचने की इच्छा, अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की ज़रूरत, जिम्मेदारी को पालन करने की व्यग्रता, शिक्षा का स्थान, दाम्पत्य जीवन में आए विसंगतियाँ आदि देख सकते हैं।

महूर्जी के नारी पात्र समस्याओं से भिड़े रहने पर भी किसी न किसी प्रकार जीतने की इच्छा भी प्रकट करती है। नारी पात्रों के चरित्रोद्घाटन में वे अत्यधिक वैज्ञानिक और व्यावहारिक हैं। उनकी कहानियाँ प्रायः आधुनिक कहानियों के अन्तर्गत रही जाती हैं। उन्होंने कामकाजी महिलाओं को एक नई जिन्दगी योजना का अवसर दिया। परिवारिक समस्याओं और बाहरी उलझनों से भारतीय नारी को अधिक संकटों और दरों का सामना करना पड़ा। नारी जीवन के निश्चल मुहूर्तों को अर्थप्रदान करनेवाली लेखिका है महूर्जी।